Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college Darbhanga
16.04.2020

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र
International Economics

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार व्यापार, निवेश, वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह, विभिन्न देशों के निवासियों के बीच लेन-देन, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजारों में पूँजी के प्रवाह और विनिमय दरों आदि अनेक बिन्दुओं का अध्ययन करता है। महान अर्थशास्त्री अल्फ्रेड मार्शल ने अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है। "अर्थशास्त्र जीवन के साधारण व्यवसाय में मानव जाति का अध्ययन है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक क्रियाओं के उस भाग की जाँच करता है, जिसका निकट संबंध भौतिक साधनों की प्राप्ति और उसके उपयोग से है जो कल्याण के लिए आवश्यक है।" इस प्रकार मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र का संबंध मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं से है। इन आर्थिक क्रियाओं का सम्बन्ध राष्ट्रीय उत्पादन के उपभोग, उत्पादन विनिमय और वितरण से होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की आधारभूत अवधारणाएँ और विश्लेषणात्मक उपकरण भी ठीक वही हैं जिनका अध्ययन अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों के अन्तर्गत किया जाता है। अर्थशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों से हम मानव के आर्थिक क्रिया कलाप का विश्लेषण करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र में भी जैसा की नाम से स्पष्ट है, विभिन्न राष्ट्रों के बीच पाए जाने वाले आर्थिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है। अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध में भी मनुष्य की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रयत्नों का एक अंग है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र में आर्थिक क्रियाओं के अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक अर्थव्यवस्था के स्थान पर एक से अधिक अर्थव्यवस्थाओं का अध्ययन होता है। यह अध्ययन कीमत व रोजगार का स्तर तथा आर्थिक विकास को निर्धारित करने वाले घटकों को दृष्टि में रख कर किया जाता है। अर्थशास्त्री चार्ल्स किंडलबर्गर ने कहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सामान्य अर्थशास्त्र का ~~का~~ एक विशेष अध्ययन है।

आज वैश्वीकरण के संदर्भ में प्रायः यह देखा जा सकता है दुनियाँ का कोई भी राष्ट्र आत्मनिर्भर नहीं है। प्रत्येक राष्ट्र कुछ-न-कुछ अंशों में एक दूसरे राष्ट्र पर निर्भर है, वह कुछ विशेष वस्तुओं का ही उत्पादन करता है। और अपने उत्पादन का एक भाग निजी उपभोग के लिए रख कर शेष को अन्य राष्ट्रों से अपनी अन्य आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करने में प्रयोग करता है। इस प्रकार एक देश दूसरे देश से व्यापार करता है। जिसके फलस्वरूप उनमें परस्पर आर्थिक संबंध स्थापित हो जाता है। राष्ट्रों के इन पारस्परिक संबंधों से कुछ विशेष समस्याएँ भी उत्पन्न हो जाती हैं अतः अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र वह विज्ञान और कला है। जिसमें राष्ट्रों के मध्य आर्थिक संबंधों एवं उससे उत्पन्न होने वाली आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। और समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जाता है।

प्रो० हैरोड के अनुसार "अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का सम्बन्ध उन सब आर्थिक

Scanned by CamScanner

लेन-देनों से है जो देश की सीमा से बाहर किये जाते हैं। उनमें उदाहरण, एक राष्ट्र के नागरिकों द्वारा दूसरे राष्ट्र के नागरिकों के द्वारा ऋण का आदान-प्रदान और माल का क्रय-विक्रय शामिल है।

प्रो० वाल्टर मैन व हूलमैन के अनुसार "अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का सम्बन्ध, वस्तुओं, सेवाओं, उपहारों पूंजी एवं बहुमूल्य धातुओं के विनिमय से है। जिनमें इन मदों का स्वामित्व एक देश के निवासियों के पास से दूसरे देश के निवासियों के पास चला जाता है। यह इस विनिमय का तथा उन कानूनों, संस्थाओं व्यवहारों का जिनके अन्तर्गत यह व्यापार होता है, वर्णन व विश्लेषण करता है। यह निष्कर्ष निकालता है तथा प्रवृत्तियों एवं कानूनों का विकास करता है जो उन स्वरूपों को निश्चित करते हैं जिनके अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार किया जाता है।

प्रो० एल्सवर्थ के अनुसार "जिस प्रकार अर्थशास्त्र की परिभाषा यह कहकर दी जाती है कि अर्थशास्त्र वह है जो अर्थशास्त्री करते हैं उसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का सम्बन्ध भी विभिन्न राष्ट्रों के बीच आर्थिक संबंधों से है।"

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र का वह अंग है जो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित है। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र के नियम अन्य आर्थिक नियमों से पृथक नहीं होते, परन्तु इनको अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की विशिष्ट परिस्थितियों में लागू किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का उपर्युक्त परिभाषाओं, विवेचनाओं के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की एक सरल परिभाषा इस प्रकार भी हम दे सकते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र सामान्य अर्थशास्त्र की वह शाखा है जिसमें विभिन्न राष्ट्रों के बीच व्यापार से उत्पन्न होने वाले आर्थिक सम्बन्धों एवं उससे संबंधित आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का व्यापक महत्व है।

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का क्षेत्र वैश्विक में व्यापक हो गया है। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र के क्षेत्र से आशय उस सम्पूर्ण ज्ञान से है जिसका अध्ययन इसके अन्तर्गत किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ के विषय में वाणिज्यवादियों से लेकर फ्रेडरिक लिस्ट तक तथा मार्शल से लेकर हेक्सचर व ओहलिन तक में विस्तृत व्याख्या की है। विगत कुछ दशकों में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में साझा बाजारों एवं अन्य प्रकार के क्षेत्रीय संगठनों की स्थापना से अनेक जटिलताएँ उत्पन्न हो गयी हैं। अल्पविकसित देशों के आर्थिक विकास में भी विदेशी व्यापार व विदेशी सहायता का भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वर्तमान समय में आर्थिक सहयोग के कारण विभिन्न देशों के आर्थिक विकास की प्रक्रिया पर जो प्रभाव हो रहे हैं कुछ वर्ष पूर्व तक ये सभी कल्पनातीत थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का क्षेत्र वर्तमान समय में व्यापक रूप से विस्तृत हो गया है। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र के सम्पूर्ण अध्ययन हेतु इसके विषय सामग्री में कुछ विषयों का अध्ययन अतिआवश्यक है। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में कुछ विषयों का अध्ययन आवश्यक है। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की आवश्यकता और सिद्धान्त, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के मौद्रिक पहलु, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक नीति, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक एवं मौद्रिक सहयोग, विदेशी व्यापार की संरचना, अर्द्धविकसित देशों की आर्थिक विकास की समस्याएं आदि अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र के विषय-सामग्री है जिसके व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है।

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र वर्तमान वैश्वीकरण में पूरा विश्व एक साथ व्यापार सहित अन्य मामलों में आपसी सहयोग कर रहे हैं यह सभी अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का ही प्रभाव है इससे विश्व के अल्पविकसित देश अधिक लाभान्वित हो रहे हैं।

Scanned by CamScanner